

MED. II Sem.

Unit V -

II Topic - E-Learning, Intechn Education, Teacher Education Through distance media, integrati-

of inter teacher education in Class Room as well as in Administration.

→ ई-मिथा के सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूप में परिभाषित किया जाता है जो स्वाभाविक तौर पर डिजात्मक होते हैं और निम्न उद्देश्य शिक्षक मिथार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान के नव निर्माण को प्रभावित करता है।

ई-लर्निंग :- इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस और डिजिटल मीडिया के माध्यम शिक्षा (Education) को ई-लर्निंग कहलाता है।

जैसे - वेब आधारित लर्निंग, मोबाइल आधारित लर्निंग, या कंप्यूटर आधारित Virtual classroom. online, AP. Act.

यह दो प्रकार (A) Synchronous :-
(B) Asynchronous :-

E-Learning का concept 'जैसे-जैसे इन्टरनेट उपयोग करने की संख्या बढ़ने लगी तो लोगों को E-Learning का concept भी समझ में आने लगा। जिन हाशे, मिथकों को शिक्षा दी नहीं परन्तु आवश्यक कार्यों हेतु बहर व इर जाया पड़ता था उनके लिए कक्षा सन्निह हो रहा, वर्तमान समय और विषम परिस्थितियों में तो इसकी उपयोगिता अत्यन्त महत्व धक हो गयी है।

लाभ

online study ई-शिक्षा इससे जुड़े संगठनों एवं व्यक्तियों को लाभ प्रदान कर सकता है।

1. **संशोधित प्रदर्शन** : अमेरिकी शिक्षा विभाग द्वारा किए गए 12 वर्षों के अनुसन्धान के एक मेटा-विश्लेषण से पता चला कि आम तौर पर प्रत्यक्ष पाठ्यक्रमों का अनुसरण करके उच्चतर शिक्षा के लिए अध्ययन करने वाले छात्रों की तुलना में ऑनलाइन अध्ययन करने वाले छात्रों का प्रदर्शन काफी बेहतर था।^[2]

2. **वर्धित उपयोग** : सबसे अधिक बुद्धि वाले प्रशिक्षक अपनी हदों के बाहर भी अपने ज्ञान का साझा कर सकते हैं, जिससे छात्रगण अपने शारीरिक, राजनीतिक और आर्थिक के बाहर भी इन पाठ्यक्रमों का लाभ उठा सकते हैं। मान्यता प्राप्त विशेषज्ञों के पास किसी भी इच्छुक व्यक्ति को न्यूनतम लागत पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सूचना उपलब्ध कराने का अवसर होता है। उदाहरण के लिए, एमआईटी ओपनकोर्सवेयर (MIT OpenCourseWare) कार्यक्रम ने विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम और व्याख्यान के पर्याप्त अंशों को मुफ्त ऑनलाइन उपलब्ध करा दिया है।

3. **शिक्षार्थियों की सुविधा एवं नम्यता** : कई परिस्थितियों में, ईलर्निंग/ईशिक्षा खुद से भी किया जाता है और इसका शिक्षा सत्र 24x7 उपलब्ध रहता है। शारीरिक रूप से कक्षाओं में

भाग लेने के लिए शिक्षार्थी किसी विशेष दिन/ समय के अधीन नहीं होते हैं। वे अपनी सुविधानुसार शिक्षा सत्रों को कुछ देर के लिए रोक भी सकते हैं। सभी ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के लिए उच्च प्रौद्योगिकी की आवश्यकता नहीं होती है। इसके लिए आम तौर पर केवल बुनियादी इंटरनेट उपयोग, ऑडियो और वीडियो की जानकारी होना ही काफी है^[3] इस्तेमाल किए जाने वाले प्रौद्योगिकी के आधार पर छात्र काम के वक़्त भी अपना पाठ्यक्रम शुरू कर सकते हैं और इस पाठ्यक्रम को किसी दूसरे कंप्यूटर पर अपने घर में भी पूरा कर सकते हैं।

4. **खास तौर पर 21वीं सदी में शिक्षार्थियों के अनुशासन, पेशे या करियर में आवश्यक डिजीटल साक्षरता कौशल की मौजूदगी को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कौशल**

प्रौद्योगिकी सम्बन्धी मुद्दे

शिक्षा प्रौद्योगिकी, अनुदेशात्मक प्रौद्योगिकी, एवं शैक्षिक प्रद्योगिकी जैसे शब्दों के साथ-साथ आम तौर पर इस शब्द का इस्तेमाल 1980 के दशक के कंप्यूटर-आधारित प्रशिक्षा या कंप्यूटर सहायता प्राप्त अनुदेश की अपेक्षा एक अधिक व्यापक अर्थ में शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। यह ऑनलाइन शिक्षा या ऑनलाइन शिक्षा शब्दों से भी अधिक व्यापक है जो आम तौर पर पूरी तरह से वेब-आधारित शिक्षा को संदर्भित करते हैं। उन मामलों में जहां मोबाइल प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल किया जाता है, वहां एम-शिक्षा शब्द और अधिक आम हो गया है। हालांकि, ई-शिक्षा में भी

केवल प्रौद्योगिकी से परे कई निहितार्थ हैं और यह इन प्रणालियों के इस्तेमाल से होने वाले वास्तविक शिक्षा को संदर्भित करता है।

ई-शिक्षा स्वाभाविक रूप से दूरस्थ शिक्षा एवं नम्य शिक्षा के लिए अनुकूल होता है, लेकिन आमने-सामने या प्रत्यक्ष अध्यापन के साथ भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है, इस मामले में आम तौर पर मिश्रित शिक्षा शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। ई-शिक्षा के अग्रदूत बर्नार्ड लस्किन का तर्क है कि यदि ई-शिक्षा को प्रभावशाली बनाना है तो "E" (ई) अक्षर में व्यापक अर्थ होने की बात समझ में जरूर आनी चाहिए। लस्किन कहते हैं कि "ई" की व्याख्या/अनुवाद इस तरह से की जानी चाहिए कि इसका अर्थ एक परंपरागत राष्ट्रीय व्याख्या/अनुवाद के रूप में "इलेक्ट्रॉनिक" के अतिरिक्त रोमांचक, ऊर्जावान, उत्साही, भावुक, विस्तृत, उत्कृष्ट, एवं शैक्षिक निकले।

ई-शिक्षा में प्रयुक्त संचार प्रौद्योगिकियां

संचार प्रौद्योगिकियों को आम तौर पर अतुल्यकालिक या तुल्यकालिक के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

अतुल्यकालिक गतिविधियां ब्लॉग, विकी और विचार-विमर्श बोर्ड जैसी प्रौद्योगिकियों का उपयोग करती हैं। यहां विचार यह है कि प्रतिभागी एक ही समय शामिल अन्य प्रतिभागियों की निर्भरता के बिना विचारों या सूचना का आदान-प्रदान करने में संलग्न हो सकते हैं। इलेक्ट्रॉनिक मेल (ईमेल) भी अतुल्यकालिक ही होता

है जिसमें एक ही समय दोनों प्रतिभागियों की भागीदारी के बिना ही मेल भेजा या प्राप्त किया जा सकता है।

तुल्यकालिक गतिविधियों में एक ही समयावधि के दौरान एक या एक से अधिक प्रतिभागियों के साथ विचारों एवं सूचना का आदान-प्रदान शामिल होता है। आमने-सामने की जाने वाली चर्चा तुल्यकालिक संचार का एक उदाहरण है। तुल्यकालिक गतिविधियां तुरंत शामिल होने वाले सभी प्रतिभागियों के साथ, जैसे - एक ऑनलाइन चैट सत्र या एक आभासी कक्षा या बैठक के साथ, होता है।

आभासी कक्षाओं एवं बैठकों में अक्सर संचार प्रौद्योगिकियों के एक मिश्रण का उपयोग किया जा सकता है।

संशैक्षिक दृष्टिकोण या संदर्श

ईशिक्षा के लिए विभिन्न संशैक्षिक दृष्टिकोणों का इस्तेमाल किया जा सकता है जिसमें शामिल हैं:

- अनुदेशात्मक डिजाइन - यह अनुदेशात्मक शिक्षा की पारंपरिक संशिक्षा है जहां खास तौर पर पाठ्यक्रम पर ध्यान दिया जाता है और एक केंद्रीकृत शिक्षित समूह या एक अकेला शिक्षक ही इसे विकसित करते हैं।
- सामाजिक-रचनावादी - इस तरह की संशिक्षा को खास तौर पर चर्चा मंच, ब्लॉग, विकी एवं

ऑनलाइन सहयोगात्मक गतिविधियों के इस्तेमाल से अच्छी तरह से समर्थ बनाया जाता है। यह एक सहयोगात्मक दृष्टिकोण है जो स्वयं छात्रों सहित एक व्यापक समूह के लिए शैक्षिक सामग्री रचना का अवसर प्रदान करता है। वन लैपटॉप पर चाइल्ड फाउंडेशन ने अपनी परियोजना में एक रचनावादी दृष्टिकोण को इस्तेमाल करने का प्रयास किया।^[34]

- **लौरिलार्ड का संवादात्मक मॉडल**^[35] भी खास तौर पर ईशिक्षा से संबंधित है और गिली सालमन का पंच-चरण मॉडल चर्चा बोर्डों के उपयोग का एक संशैक्षिक दृष्टिकोण है।^[36]
- **संज्ञानात्मक संदर्श** शिक्षा में शामिल संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के साथ-साथ मस्तिष्क के कार्य करने की विधि पर भी प्रकाश डालता है।^[37]
- **भावनात्मक संदर्श** प्रेरणा, वचनबद्धता, आमोद-प्रमोद, इत्यादि की तरह की शिक्षा की भावनात्मक पहलुओं पर प्रकाश डालता है।^[38]

- **व्यावहारिक संदर्श** शिक्षा प्रक्रियाओं के कौशल एवं व्यावहारिक प्रतिफलों पर प्रकाश डालता है। कार्यगत व्यवस्था में भूमिका-निर्वाह एवं अनुप्रयोग. [39]
- **प्रासंगिक संदर्श** शिक्षा को प्रोत्साहित करने का सामर्थ्य रखने वाले पर्यवरणीय एवं सामाजिक पहलुओं पर प्रकाश डालता है। अन्य लोगों के साथ, सहयोगात्मक खोज एवं सहकर्मी के समर्थन के साथ-साथ दबाव के महत्व पर पारस्परिक विचार-विमर्श. [40]